जागरण, उपवास, विषैले फूल चढ़ाना और भांग पीना.... इनका शिवरात्रि से क्या है सम्बंध?

हम परमात्मा को तलाशेंगे कैसे? कौन हमें उनसे मिलवायेगा? ये प्रश्न हमारे मन में हमेशा उठता रहता है पर आज हम उस पर थोड़ा सा विचार करेंगे। अगर हम आपके परिवार के उन सदस्यों को यहाँ पर बुलाते हैं, जो आपको बहुत अच्छी तरह से जानते हैं और उनको कहें कि आपका परिचय दें। वे सब एक ही व्यक्ति के बारे में बतायेंगे, लेकिन एक जैसा नहीं बतायेंगे। जो सबसे ज़्यादा करीब हैं, जो आपको बहुत ही अच्छी तरह से जानते हैं, वे भी आपका परिचय एक तरह से नहीं देंगे। उनका अपने रिश्ते के अनुसार परिचय बदलता जायेगा। वे सभी आपके बारे में एक जैसा नहीं सुनायेंगे लेकिन उनमें से कोई भी गलत नहीं होगा। क्योंकि फर्क आ रहा है, तो इसका मतलब कोई भी 100 प्रतिशत सही नहीं होगा। इसलिए सबके विचारों में अंतर होगा। आपका यथार्थ परिचय कि आप असल में कौन हैं? क्या महसूस करते हैं? क्या सोचते हैं? आप सारा दिन क्या करते हैं? आपका सही परिचय कौन देगा? आप खुद देंगे ना! वो सब आपके इतने करीब हैं लेकिन वे यथार्थ परिचय नहीं दे पा रहे हैं। कोई गलत नहीं होगा,लेकिन कोई भी 100 प्रतिशत सही भी नहीं होगा। जब तक आप अपना 100 प्रतिशत सही परिचय खुद नहीं देंगे तब तक स्पष्ट नहीं होगा। हज़ारों वर्षों से धर्मात्माओं ने, महात्माओं ने, संत आत्माओं ने, अलग-अलग लोगों ने आकर हमें उस परमात्मा का परिचय दिया है। हरेक ने उसे जिस दृष्टि से देखा, जिस सम्बन्ध से उसको पहचाना और जिस सम्बन्ध से उसको जाना उसी अनुसार उसका परिचय दिया। अलग-अलग किसी की बात नहीं कर रहे थे, वे सब एक ही शक्ति का परिचय दे रहे थे। उनमें से कोई भी गलत नहीं था जिन्होंने भी परमात्मा का परिचय दिया, लेकिन फिर भी सबके परिचय में थोड़ा-थोड़ा अन्तर आ गया, इसका मतलब कोई भी 100 प्रतिशत सही नहीं था। उन्होंने जिस दृष्टिकोण से देखा वैसा परिचय दिया। तो अब परमात्मा का सही 100 प्रतिशत यथार्थ परिचय कौन देगा? परमात्मा खुद देंगे। अगर आपको परमात्मा का सही परिचय चाहिए तो वो

अपने आप से पूछना होगा कि जो सर्वशक्तिवान है, जो ऑलमाइटी अथॉरिटी है, जो शांति का सागर है, जो प्रेम का सागर है, पवित्रता का सागर है वो मेरे अंदर बैठा है?

आपको तभी मिलेगा जब वो खुद आकर अपना परिचय देगा। अगर हम में से कोई भी उसका परिचय देते हैं तो फिर भी थोड़ा-सा अंतर आयेगा। परमात्मा जब स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं तो वो परिचय बड़ा सरल होगा। हमने तो परमात्मा का परिचय बड़ा जटिल कर दिया था क्योंकि हम सत्य नहीं जानते हैं। लेकिन इस सारे सृष्टि चक्र में एक ऐसा समय आता है जब परमात्मा स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं और वो परिचय बहुत आसान और 100 प्रतिशत यथार्थ होता है। और जब आप 100 प्रतिशत यथार्थ रूप से किसी को जान लेते हैं, फिर उसके साथ रिश्ता जोड़ना बहुत सरल हो जाता है। भगवान रचयिता है और प्रकृति उसकी रचना है फिर उसकी रचना को ही रचयिता हम कैसे मान सकते हैं? जैसे एक कुम्हार है बहुत सुंदर-सा मटका बनाता है, उस मटके को देखकर हमें उसकी याद आ सकती है,लेकिन वो परमात्मा नहीं है। फिर हम कहते हैं आत्मा सो परमात्मा मतलब आत्मा ही परमात्मा है। एक तरफ हम कहते हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे और फिर दूसरी तरफ कहते हैं आत्मा ही परमात्मा है। बच्चा पिता के जैसा हो सकता है,लेकिन बच्चा ही पिता बन जाये, वो संभव नहीं है। वो किसी और रचना का पिता बन सकता,लेकिन वो अपना ही पिता नहीं बन सकता। उसका पिता उसका अपना ही रहेगा। फिर कहते हैं कि परमात्मा के ही अंश हैं हम और परमात्मा में ही समा जायेंगे या हम कहते हैं कि कण-कण में परमात्मा है। अधिकतर लोग आजतक ये मानते हैं कि हरेक के अंदर परमात्मा है और उसके पीछे भी कुछ भाव रहा होगा। लेकिन हमें अपने आप से पूछना होगा कि जो सर्वशक्तिवान है, जो ऑलमाइटी अथॉरिटी है, जो शांति का सागर है, जो प्रेम का सागर है, पवित्रता का सागर है वो मेरे अंदर बैठा है? अगर वो मेरे अंदर बैठा है तो मेरा मनोभाव क्या होना चाहिए? अगर शांति का सागर आपके अंदर बैठा है तो क्या क्रोध आ सकता है, दुःख आ सकता है, चिंता हो सकती है, जो दृष्टिकोण आज हमारा है उसका अंश भी नहीं हो सकता।

नये साल की कर लें प्लानिंग

- ब्र.कु. उर्वशी बहन,नई दिल्ली

ये साल तो बीते सालों की तरह गुज़रने ही वाला है परंतु आने वाले साल का क्या सोचा है आपने? क्या करेंगे आप इस साल? क्या आप अच्छा-अच्छा खायेंगे, पहनेंगे और घूमने जायेंगे? हाँ,ये सब तो ठीक है लेकिन खाने, घूमने के अलावा और क्या करेंगे आप? क्योंकि बाबा के बच्चों का कोई भी दिन, त्योहार और नया साल यहीं तक सीमित नहीं होता है ना! बाबा के बच्चों का हर दिन एक नई क्रांति से शुरू होता है, तपस्या से शुरू होता है, धारणा से शुरू होता है और पोतामेल के बाद योग निद्रा पर खत्म होता है। फिर क्या-क्या नया करने वाले हैं आप इस साल? क्या आपने कुछ सोचा है? अब आप कहेंगे कि हमारी तो मंज़िल है ही कर्मातीत अवस्था को पाने की तो इस बार भी हम यही लक्ष्य रखकर आगे बढ़ेंगे, नए साल की शुरुआत करेंगे। ये तो बहुत खुशी की बात है कि आपको आपका लक्ष्य पूर्ण रीति स्पष्ट है परंतु क्या-क्या विधियां अपनाएंगे आप उसको प्राप्त करने के लिए, क्या ये भी स्पष्ट है आपको? कर्मातीत अवस्था तो है हमारी मंज़िल, परंतु उस मंज़िल तक पहुंचने का रास्ता क्या है हमारा? जैसे मधुबन आने के लिए आपको पता होता है कि आप किस रास्ते से गुज़रेंगे और रेलगाड़ी, बस, हवाई जहाज किसके माध्यम से आयेंगे,ठीक ऐसे ही हमें ये भी ज्ञान होना चाहिए कि कर्मातीत अवस्था तक जाने के लिए क्या, कब और कैसा पुरूषार्थ करना है, कब अपनी चेकिंग करनी है। फिर अगर कोई कमी निकलती है तो किस गुण व शक्ति से उसको भरना है, कौन-सा ज्ञान का प्वाइंट वहां रखना है। क्रोध को शांति की शक्ति से खत्म करना है या प्रेम की शक्ति से, नफरत को प्रेम की शक्ति से खत्म करेंगे या धैर्यता से? ये सभी बातें जब हमें स्पष्ट होंगी तभी हम आगे बढ़ सकते हैं।

इस साल की अगर आपने अपनी योजना बना ली है तो बहुत अच्छा और अगर नहीं भी बनाई है तो कोई हर्जा नहीं अब कर लीजिए। मेरा अनुभव ये कहता है कि हमारे छोटे-छोटे कदम ही हमें हमारी मंज़िल तक ले जाते हैं। जैसे सीधे 4 घंटे के योग की योजना न बनाएं बल्कि आप 2 घंटे के योग की योजना बनाएं। अगर आपका योग अभी सिर्फ 1 घंटा या उससे कम है तो आप सीधे निर्विकारी बनने की ना सोचें। इस आने वाले साल में बल्कि आप अपने 1-1 विकार पर काम करेंगे। हम उदाहरण से आपको पूरा स्पष्ट करते हैं, आप स्वयं की चेकिंग करें किस समय और किस बात को लेकर आपमें कौन-सा विकार इमर्ज होता है।

जैसे संगठन में जाने से आपको अहंकार आता है, क्रोध आता है, आप कमज़ोर महसूस करते हो तो क्या किसी के देह की सुंदरता को देखकर आप स्वयं के लिए बुरा महसूस करते हो? क्या अपने कपड़े, धन, सुंदरता, ज्ञान पद को लेकर कमज़ोर या अहंकारी हो जाते हो? इस रीति से स्वयं की चेकिंग करो आप। कब, कौन-सी और किस विधि से माया मुझ आत्मा पर अटैक करती है? क्योंकि जब तक हम स्वयं को चेक नहीं करेंगे तब तक हम स्वयं को चेंज भी नहीं कर सकेंगे। जितना-जितना चेक करेंगे उतना-उतना चेंज होंगे ये तो अव्यक्त बापदादा के महावाक्य हैं। नो चेक, नो चेंज। इसलिए अब आप अपनी यही चेकिंग कीजिए कि कब और किस परिस्थिति में कौन-सा विकार मुझे हिट करता है, जब आप ये कर लेंगे तो यकीन मानिए आप जल्दी ही स्वयं को परिवर्तित भी कर लेंगे। क्योंकि कई बार हम योग में इमर्ज कर रहे होते हैं सहन करने की शक्ति परंतु वास्तव में चाहिए होती है हमें समाने की शक्ति। कहते भी हैं ना कि "जांच सही तो इलाज सही"। ये वाक्य बिल्कुल सटीक बैठता है हम ब्राह्मणों के ऊपर भी, हमारे विकार रूपी बीमारी के लिए भी।

अब आप प्रतिदिन कुछ घंटे अकेले में बैठ स्वयं की चेकिंग कीजिए कि क्या-क्या बदलाव आपको लाने हैं स्वयं में,और-और कैसे उन बदलावों को ला सकते हैं। आपको स्वयं ही रास्ता मिलेगा और नहीं तो आप मुरली से मदद लीजिए, बाबा से शक्ति लीजिए, बाबा किसी न किसी रीति से आपको टच करा ही देंगे। यकीन मानिए आप इन छोटी-छोटी परिस्थितियों में जब स्वयं की चेकिंग करेंगे ना तो आप बहुत ही जल्द स्वयं में बहुत परिवर्तन पायेंगे,ये मेरा खुद का अनुभव है। वास्तव में जो विकार हमें छोटे लगते हैं ना, वो असल में छोटे होते नहीं हैं। जैसे ये लोभ, मोह को जो हम काम विकार से छोटा समझते हैं परंतु हकीकत में इनकी तार बहुत सूक्ष्म और गहरी होती है। एक फिल्म की लाइन है "जो दिखता है वो होता नहीं और जो होता है वो दिखता नहीं"। ये लाइन बिल्कुल सत्य है क्योंकि हमारी ज़िंदगी भी तो एक फिल्म की तरह ही है ना और इस सृष्टि नाटक मंच पर, करते हैं अभिनय हम यहाँ। तो इस नाटक में भी जो हमें आसान दिखता है व छोटा दिखता है वो हकीकत में छोटा होता नहीं है, लेकिन इसका अर्थ ये भी नहीं है कि हम उसमें कभी कुछ परिवर्तन कर सकें या उसको खत्म न कर सकें ऐसा कुछ भी नहीं है। इसलिए अब जब हम सभी को अपना लक्ष्य स्पष्ट हो ही गया तो क्यों न हम स्वयं में वो सभी लक्षण भी धारण कर लें जो उसकी (लक्ष्य) प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं।

फतेहाबाद-हरियाणा। गीता जयंती महोत्सव में आने पर सांसद सुनीता दुग्गल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मोहिनी बहन एवं ब्र.कु.गीता बहन।

बीबीगंज-फर्रूखाबाद(उ.प्र.)। त्रिदिवसीय 'राजयोग शिविर' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए वीरेन्द्र सिंह राठौर,प्रदेश सह संयोजक,सैनिक प्रकोष्ठ भाजपा, सुशील कुमार शाक्य,विधायक,अमृतपुर, छोटे सिंह यादव,पूर्व सांसद, ब्र.कु. मंजू बहन, सुरेश चन्द्र गोयल तथा माउण्ट आबू से वरिष्ठ राजयोग शिक्षक राजयोगी ब्र.कु. रामनाथ भाई व राजयोगी ब्र.कु. पद्मनाभ भाई।

हाथरस-उ.प्र.। विश्व वृद्धजन दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ज्युडिशियल मजिस्ट्रेट विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव कुमुद उपाध्याय, ब्र.कु.शांता बहन, डॉ. पी.पी.सिंह, डॉ. बी.पी. सिंह, डिस्ट्रिक्ट होम्योपैथिक ऑफिसर डॉ.अशोक चौहान, सदस्य विधिक सेवा प्राधिकरण मनीष कौशिक, नगरपालिका अध्यक्ष आशीष शर्मा आदि उपस्थित रहे।

सोनीपत से.15-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा गांव मुरथल के राजकीय सरकारी विद्यालय में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सरपंच रामकरण, राजकीय सरकारी विद्यालय के प्रिंसिपल सविता बहन, पर्यावरण एक्टिविस्ट मनीष, ब्र.कु.प्रमोद बहन, अन्य शिक्षकगण एवं बच्चे उपस्थित रहे।

भादरा-राज.। डॉ. विजय गर्ग को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.चंद्रकांता बहन।

आमेट-राज.। 'खुशनुमा जीवन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान जिला प्रमुख रतनी देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गौरी बहन। साथ हैं ब्र.कु. रीटा बहन एवं ब्र.कु. पूनम बहन।